

विषयसूची

- मंगलाचरण	vii
- पुरोवाक्	ix
- सम्पादकीय	xiii
- समर्पण	xvii

पालि खण्ड

1. सम्यक् सम्बुद्ध का ब्रह्मविहार	- प्रो. रमेश प्रसाद	3
2. पालि एवं बौद्ध-संस्कृत साहित्य में पर्यावरण संरक्षण चिन्तन	- डॉ. प्रफुल्ल गड़पाल	14
3. पालि साहित्य में ध्यान भावना का स्वरूप	- डॉ. जयवंत खंडारे	26
4. कुशल-कम्म-पथ (कुशल-कर्म-पथ)	- गलदन सेंगे नेगी	35
5. अनात्मवाद	- सत्येन्द्र कुमार पाण्डेय, नोबू ग्यालछेन नेगी	41
6. मानव-धर्म : बौद्धधर्म के परिप्रेक्ष्य में	- संजीव कुमार दास	46
7. बौद्धसाहित्य में वर्णित द्विविध नैरात्म्य-	डॉ. कृष्णा कुमारी	60
8. पालि-वंस(वंश)-साहित्यस्य संक्षिप्तपरिचयः	- डा. मोहनमिश्रः	68
9. पालिसाहित्ये आहारस्स महत्तं	- वेदव्यास पाण्डेय	74
10. बौद्धपरम्परा का उद्भव एवं विकास (धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में)	- डॉ. राजनारायण यादव, डॉ. शैलेन्द्र कुमार सिंह	82
11. पालि साहित्य में वर्णित सुन्दरीनन्दाथेरीगाथा (एक अनुशीलन)	- डॉ. ज्ञानादित्य शाक्य	96
12. थेरगाथापालि एवं थेरीगाथापालि में पर्यावरण के तत्त्व	- डॉ. प्रदीप कुमार द्विवेदी	105
13. विश्वशान्ति हेतु पालि तिपिटक में उपलब्ध बुद्धवचनों की उपयोगिता	- राजीव कुमार नेगी	112

14. The Buddhist Philosophy of
Plurality of Truth: A Pragmatic
Approach for Conflict Resolutions
in the Globalized World - Prof. Ram Nandan Singh

xx

15. Relevance of Buddha"s Dhamma
in the context of post Covid 19 world
with special reference to the
BramhaVihara

- Dr. Susmita

119

124

प्राकृत खण्ड

16. जैन पत्रकारिता के विकास में
प्राकृत भाषा का योगदान

- डॉ. धर्मेन्द्र कुमार जैन

135

17. शान्तिसूरि रचित 'पुहइचंदचरियं' की
छन्द-योजना

- डॉ. सतेन्द्र कुमार जैन

140

18. काव्यप्रकाशे ध्वनिनिर्णयं यावदुद्धृतानां
प्राकृतपद्यानां चमत्कारातिशयविशेषः

- डॉ. राधावल्लभशर्मा

167

19. The Making of the Self and the
Other: The Representations of
Hindus and Muslims in a Fifteenth
Century Prakrit Text

- Birendra Nath Prasad
Jay Vardhan Singh

181

20. पुस्तक समीक्षा : भगवदी आराहणा - डॉ. दर्शना जैन

191